Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 11, 2026 (Special Issue): Pg. No. 17-21
Peer Reviewed Journal

Research Article

भारतीय ज्ञान प्रणाली का सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

जगदीश

अनुसंधान पर्यवेक्षक, सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, उज्जैन (भरतपुर), भारत|

DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202609

I N F O

Corresponding Author:
जगदीश, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, उच्चैन (भरतपुर), भारत|
E-mail Id:
jagatsagar1989@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0001-0938-7761

How to cite this article:
जगदीश, भारतीय ज्ञान प्रणाली का सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, Anu: a, Mul, Int, Jour, *Vol 11, 2026 (Special Issue): Pg. No. 17-21.*

Date of Submission: 2026-03-02
Date of Acceptance: 2026-03-28

A B S T R A C T

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) भारत की वैदिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का समेकित स्वरूप है, जो मानव, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन की भावना पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिपादित सतत विकास लक्ष्य (SDGs) मानवता के समग्र और समावेशी विकास का आधुनिक वैश्विक एजेंडा प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल सिद्धांतों जैसे सर्वभूत हिताय, वसुधैव कुटुम्बकम्, यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे और 'अहिंसा परमो धर्मः' के माध्यम से सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: वसुधैव कुटुम्बकम्, समावेशी विकास, सतत विकास, सर्वभूत हिताय, मानवता|

Copyright (c) 2026: Author(s). Published by Advanced Research Publications

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली का आधार सामूहिक कल्याण, पर्यावरणीय संतुलन और आध्यात्मिक-नैतिक विकास पर टिका है। वैदिक युग से ही भारत ने मानव जीवन के चार पुरुषार्थ — धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष — के माध्यम से संतुलित जीवन दृष्टि प्रदान की है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs-2015) भी इसी दर्शन का आधुनिक रूप हैं, जिनका उद्देश्य है — गरीबी उन्मूलन, भुखमरी की समाप्ति, सभी के लिए स्वच्छता एवं पेयजल, लैंगिक समानता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, जलवायु संरक्षण तथा सतत उपभोग और उत्पादन के पैटर्न को प्रोत्साहित करना है। इसके अंतर्गत 17 लक्ष्यों और 169 विशिष्ट लक्ष्यों का निर्धारण किया गया है जिनकी प्राप्ति 2030 तक पूरी दुनिया को करनी है| वर्ष 2000 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मिलेनियम डवलपमेंट गोल (MDG) जिनको 2015 तक प्राप्त करना था जिसे आगे बढ़ते हुए सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किये गए हैं| जिनको प्राप्त करने के लिए शासन-प्रशासन और शैक्षणिक मूल्यों के द्वारा प्रयास किया जा रहा है| इसी दिशा में भारतीय ज्ञान प्रणाली की मूल भावना इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वैचारिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर प्रेरणा देती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुख तत्त्व

- सर्वभूत हिताय (Welfare of All) - वैदिक मंत्र "सर्वे भवन्तु सुखिनः" सामूहिक कल्याण की भावना का प्रतीक है।
- वसुधैव कुटुम्बकम् (Global Family) - विश्व को एक परिवार मानने की भावना SDG-17 (Global Partnership) से सीधा संबंध रखती है।
- प्रकृति के प्रति लगाव - अथर्ववेद में कहा गया है – "माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्याः" जो SDG-13 (Climate Action) की वैचारिक जड़ है।
- समन्वित जीवन-दर्शन - आयुर्वेद, योग, वास्तु, कृषि, और पर्यावरण संबंधी भारतीय परंपराएँ प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग का आदर्श प्रस्तुत करती हैं।
- समन्वित संस्कृति – भारतीय ज्ञान प्रणाली आपसी सहयोग, प्रेम और सहिष्णुता, आपसी सामंजस्य पर आधारित रही है|
- जीवंतता एवं निरन्तरता – भारतीय ज्ञान प्रणाली में अतीत के तीन हजार साल से लेकर आज तक के मूल्यों और सिद्धांतों की उपस्थिति और निरन्तरता दिखाई देती है|

सतत विकास लक्ष्यों और भारतीय ज्ञान प्रणाली का सामंजस्य एवं दृष्टिकोण

SDG 1: गरीबी उन्मूलन - अर्थशास्त्र और ग्राम-आधारित आत्मनिर्भरता की नीति — "स्वावलंबन" का सिद्धांत। लगभग सभी शासन व्यवस्थाओं में जनकल्याण की भावना को ध्यान में रखा जाता रहा है| शासक का कार्य ऐसी नीतियों का निर्माण करना था जिससे सभी को रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकें|

SDG 2: भुखमरी की समाप्ति – कौटिल्य के अर्थशास्त्र, तारीखे-फिरोजशाही, अकबरनामा जैसे ग्रंथों में प्रजा के समक्ष आने वाले भूख के संकट से निपटने के लिए भूमि-सुधार के प्रयास, सिंचाई के साधनों (रहट, चड़स, नहरें) का विकास, अनाथालयों एवं सूखे की स्थिति (हड़प्पा सभ्यता के अन्नागार) से निपटने के लिए अन्न के भंडारण के संबंध में उल्लेख हैं|

SDG 3: स्वास्थ्य एवं कल्याण - आयुर्वेद, योग, सिद्ध, ध्यान एवं प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से समग्र स्वास्थ्य। आरोग्यं परं भाग्यं, स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्" की अवधारणा प्रस्तुत की अर्थात् स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है। पतंजलि योगसूत्र में योग को "चित्तवृत्ति निरोधः" कहा गया अर्थात् मन की वृत्तियों को रोककर आत्मिक शांति प्राप्त करना।

SDG 4: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा - गुरुकुल परंपरा में नैतिकता, अनुभव एवं जीवन-कौशल पर आधारित शिक्षा प्रणाली पर बल दिया गया है| शिक्षा को केवल रोजगार या बौद्धिक प्रशिक्षण का साधन नहीं, बल्कि जीवन के समग्र विकास का माध्यम माना गया। "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् वह विद्या ही सच्ची है जो मानव को अज्ञान, दु: ख और बंधन से मुक्त करे। भारत की नई शिक्षा नीति (NEP-2020) में भी "Equitable and Inclusive Education" पर बल दिया गया है जो प्राचीन परंपरा की आधुनिक पुनर्व्याख्या है।

SDG 5: लैंगिक समानता - वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाओं का स्थान — समानता का प्रतीक। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।" — मनुस्मृति का यह श्लोक दर्शाता है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहीं देवता निवास करते हैं। तैत्तिरीय उपनिषद् में "मातृदेवो भव, पितृदेवो भव" का उपदेश है, जिससे पारिवारिक और शैक्षिक वातावरण में समान आदर की भावना प्रकट होती है। गुरुकुल प्रणाली में कुछ विशिष्ट आश्रमों में कन्याओं को भी शिक्षण दिया जाता था। महाभारत में कहा गया "स्त्रीणां त्वेषां विशेषेण रक्षणं धर्मशास्त्रतः।"

इन ग्रंथों में यह धारणा स्पष्ट है कि परिवार और समाज का कल्याण तभी संभव है जब स्त्रियों को समान अधिकार, सम्मान और अवसर मिलें। नारी को "गृहलक्ष्मी" और "संस्कारों की जननी" कहा गया। परिवार, शिक्षा और संस्कारों के माध्यम से समाज के कल्याण में नारी की केंद्रीय भूमिका रही। स्त्री की भूमिका सृजनशीलता और सह-अस्तित्व की रही, जो "सस्टेनेबल सोसाइटी" की अवधारणा के अनुरूप है

SDG 6: स्वच्छ जल और स्वच्छता - ऋग्वेद, अथर्ववेद, और यजुर्वेद में जल को जीवन, आरोग्य और शुद्धि का प्रतीक बताया गया है। जल को पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) में प्राण-तत्व माना गया| भारतीय समाज में जल का संरक्षण और पुनर्भरण (Conservation and Recharge) सांस्कृतिक परंपरा का अंग रहा है। बावड़ियाँ, तालाब, कुएँ, झीलें, जोहड़ समाज द्वारा निर्मित सार्वजनिक जल-स्रोत थे। स्कन्द पुराण में कहा गया — "नदी शुद्धिर्महान् धर्मः" अर्थात् नदी की शुद्धता महान धर्म है। सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा और मोहनजोदड़ो) को विश्व की सबसे स्वच्छ सभ्यता माना जाता है| वहाँ नालियों की प्रणाली, स्नानागार और जल-निकासी व्यवस्था अत्याधुनिक थी। प्रत्येक घर में कूड़ा निस्तारण और जल बहाव का तंत्र था। भारतीय संस्कृति ने हमें सिखाया — "शुद्धं जीवनं स्वस्थं जीवनम्।" — स्वच्छता ही स्वस्थ और सुखी जीवन की कुंजी है।

SDG 8: सम्मानजनक कार्य और आर्थिक विकास - भारतीय शास्त्रों में "कर्म ही पूजा" कहा गया है। शिल्पकला, हस्तकला, चरखा, ग्रामोद्योग – आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के प्रतीक हैं। लोकसंग्रहाय कर्म की भावना सामूहिक आर्थिक कल्याण को प्रोत्साहित करती है। भारतीय सूत्र: "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

SDG 9: उद्योग, नवाचार और अवसंरचना- लोहे, धातु, वास्तुशास्त्र, शिल्पविद्या, नालंदा व तक्षशिला जैसी संस्थाएं तकनीकी नवाचार की प्रतीक हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता की उन्नत जल निकासी प्रणाली विश्व में प्रथम थी। भारतीय दृष्टिकोण: "कौशलं कर्मसु नवाचारम्" – कार्य में निपुणता ही नवाचार है।

SDG 10: असमानता में कमी - सर्वभूत हित का सिद्धांत — सबके लिए समान अवसर की बात करता है। गांधीजी का सर्वोदय, बौद्ध करुणा और जैन अहिंसा – सामाजिक समानता के आधार हैं। भारतीय मूल्य "एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति" – सत्य एक है, मार्ग अनेक है|

SDG 11: सतत नगर एवं समुदाय - प्राचीन नगर जैसे तक्षशिला, उज्जयिनी, पाटलिपुत्र पर्यावरण-संतुलित योजना पर आधारित थे। वास्तुशास्त्र में दिशा, जल, वायु, प्रकाश और हरियाली का संतुलन अनिवार्य माना गया। भारतीय दृष्टि: "प्रकृति पुरुष समन्वय ही आदर्श नगर।"

SDG 12: सतत उपभोग एवं उत्पादन - "यथालाभे तुष्टिः" – सीमित उपभोग और संसाधनों के संरक्षण की भावना।

SDG 13: जलवायु परिवर्तन से निपटना - भारतीय पंचमहाभूत सिद्धांत: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश का संतुलन।

SDG 14: जलमंडल में जीवन - जलचर जीवों के प्रति करुणा, मत्स्यावतार की कथा — समुद्र और जलीय जीवन के संरक्षण का प्रतीक है। नदियों और सागरों को पवित्र मानने से इनका संरक्षण स्वतः होता रहा। भारतीय दृष्टि: "सागरः माता, जीवन का पोषक"

SDG 15: स्थलीय जीवन - वनस्पति देवता, वृक्ष पूजा, पशु-पालन – जैव विविधता के संरक्षण की भारतीय परंपरा का अंग हैं। चिपको आंदोलन और बिश्नोई परंपरा इसी परंपरा की आधुनिक झलक हैं। भारतीय मूल्य: "वृक्षो रक्षति रक्षितः।"

SDG 16: शांति, न्याय और सुदृढ़ संस्थाएँ - 'धर्मराज्य' की अवधारणा — न्याय, सत्य और अहिंसा पर आधारित शासन प्रणाली। धर्म को शासन की आत्मा माना गया — "राजा धर्मेण शासनं करोति।" पंचायती राज व्यवस्था और सभा-संस्था लोकतंत्र के प्राचीन भारतीय रूप हैं।

SDG 17: साझेदारी लक्ष्य हेतु "वसुधैव कुटुम्बकम्" – समस्त विश्व एक परिवार है। यह विचार अंतरराष्ट्रीय सहयोग और साझेदारी का आदर्श उदाहरण है। भारतीय सूत्र: "एकम मानव जाति – विश्व बंधुत्व।"

भारतीय ज्ञान प्रणाली की समकालीन प्रासंगिकता

भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल परंपरा नहीं, बल्कि एक जीवंत व्यवहारिक दर्शन है। आज की वैश्विक चुनौतियाँ — जैसे जलवायु परिवर्तन, असमानता, मानसिक तनाव और नैतिक पतन — सभी का समाधान भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित है।

उदाहरण -

- योग और ध्यान SDG-3 (स्वास्थ्य) में मानसिक और शारीरिक कल्याण के साधन हैं।
- ग्राम स्वराज की अवधारणा SDG-8 (आर्थिक विकास) में आत्मनिर्भरता की नींव रखती है।
- स्वदेशी और सतत उत्पादन SDG-12 के अनुरूप है।

भारतीय नीतियों में IKS का समावेशन

भारत सरकार ने "भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) प्रकोष्ठ" की स्थापना (AICTE, शिक्षा मंत्रालय) के माध्यम से इस दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। यह प्रकोष्ठ पारंपरिक भारतीय ज्ञान को आधुनिक नीति, शिक्षा और नवाचार से जोड़ने का प्रयास कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली को पाठ्यक्रम में शामिल करने की अनुशंसा की गई है, जिससे SDG-4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) और SDG-17 (साझेदारी) को प्रोत्साहन मिलता है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली मानवता के सर्वांगीण विकास की वह दृष्टि प्रदान करती है जिसमें मानव, समाज और प्रकृति का संतुलित संबंध अंतर्निहित है। सतत विकास लक्ष्यों की सफलता केवल नीतियों से नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन में परिवर्तन से संभव है — और यह परिवर्तन भारतीय ज्ञान परंपरा ही प्रदान कर सकती है।

अतः कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली न केवल SDGs की प्राप्ति का वैचारिक आधार है, बल्कि यह वैश्विक विकास का एक मानवतावादी मॉडल प्रस्तुत करती है।

संदर्भ सूची

[1] अथर्ववेद, 12.1.12

[2] कौटिल्य, अर्थशास्त्र, अध्याय 1

[3] राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारत सरकार (2020), अध्याय 4

[4] संयुक्त राष्ट्र संघ, Sustainable Development Goals

[5] भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकोष्ठ (AICTE), Vision Document on IKS, 2021.

6 Government of India. National Education Policy 2020. Ministry of Education, New Delhi.

7 United Nations. Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development. UNDP, New York, 2015.

8 Sharma, R.N. (2019). Indian Knowledge System and Its Global Relevance. Delhi: Concept Publishing Company.

9 Joshi, Kireet (2002). Education for Character Development and Value-based Governance. Pondicherry: Sri Aurobindo International Centre of Education.

10 AICTE (2021). Indian Knowledge System Cell – Vision Document. Ministry of Education, New Delhi.

11 Altekar, A.S. (1951). State and Government in Ancient India. Motilal Banarsidas, Delhi.